ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-138-140, YEAR JUNE 2016

आधुनिक भारत पर मार्क्सवादी इतिहास लेखन

❑ डॉ0 भौलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

भारत में मार्क्सवादी इतिहास लिखने की भाुरूआत रजनी पाम दत्त की पुस्तक 'इण्डिया टुडे' और ए0आर0 देसाई की पुस्तक 'सो ाल बैकग्राउंड आफ इंडियन नै ानलिज्म' से मानी जाती है। 'इंडिया टुडे' का लेखन इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध लैफट बुक क्लब के लिए किया गया था। 1940 में विक्टर गौलेज ने इसे प्रका ित किया था। 1947 में इसका भारतीय संस्करण निकाला गया। 1970 में 'इंडिया टुडे' के नए संस्करण की प्रस्तावना में लेखक ने इसकी सीमाओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि ''इस पुस्तक को अपने समय की ऐतिहासिक कृति के रूप में देखा जाए'' जिसमें भारत में अंग्रेज भाासन और भारतीय जन संघर्ष के सतत विकास को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से देखा गया है।

भारतीय इतिहास में मार्क्सवादी स्कूल, वास्तव में, 20वीं सदी के तीसरे–चौथे द ाकों में तेजी से उभर कर सामने आया। इस स्कूलो के इतिहासकारों ने पूर्ववर्ती दोनों सकूलों अर्थात साम्राज्यवादी व राष्ट्रवादी की स्थापनाओं को नकार दिया व एक नए क्रान्तिकारी इतिहास लेखन की भाुरूआत की। यह स्कूल लम्बे समय तक भारतीय इतिहास लेखन पर छाया रहा।

भारतीय इतिहास के 'मार्क्सवादी स्कूल' से हमारा अभिप्राय इतिहासकारों के उस समूह से है, जो कार्लमार्क्स के द र्शन से प्रभावित रहे हैं। ये इतिहासकार अपने इतिहास लेखन का आधार मुख्यतः 'मार्क्सवादी इतिहास द र्शन एवं पद्धति' को मानते हैं। मार्क्सवादी इतिहास द र्शन 'द्वन्दात्मक भौतिकवाद' तथा 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' जैसे सिद्धान्तों पर टिका हुआ है। लेकिन मार्क्सवादी स्कूल के भारतीय इतिहासकार मार्क्स के सिर्फ 'इतिहास द र्शन' का ही अनुसरण करते हैं ना कि मार्क्स द्वारा कही गई हर बात का। वि ोषकर भारतीय इतिहास के सम्बन्ध में वे कार्ल मार्क्स के अनेक निष्कर्षों को स्वीकार नहीं करते। वे इस सम्बन्ध में अपने मौलिक निष्कर्षों एवं स्थापनाओं को प्रस्तुत करते हैं। मार्क्सवादी वैज्ञानिक सिद्धान्त माना है। ये इतिहासकार वैज्ञानिक इतिहास लेखन का दावा करते हैं, लेकिन साथ ही मार्क्सवादी विचारधारा का कड़ाई से अनुसरण करते हैं, जो इनके दावे पर प्र नचिन्ह खड़ा करता है। जहॉ तक भारत मार्क्सवादी स्कूल के परिप्रेक्ष्य व पृष्ठभूमि का सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में कई चीजें हमारा ध्यान खींचती है। सर्वप्रथम 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध व 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में उभरे हुए साम्राज्यवादी व राष्ट्रवादी स्कूलों के विरूद्ध तीसरे व चौथे द ाकों के आते–आते किसी नए स्कूल की आव यकता महसूस की जाने लगी थी। पूर्ववर्ती दोनों स्कूलों के ऐतिहासिक फ्रेमवर्कों की अपनी–अपनी सीमाएं थीं। साम्राज्यवादी स्कूल के लेखक साम्राज्यवादी पूर्वाग्रहों के ि ाकार थे, वहीं राष्ट्रवाद स्कूल के राष्ट्रवादी पूर्वाग्रहों के। इन दोनों विचारधाराओं से मुक्त ऐसे नजरिए की उस समय आव यकता महसूस की जा रही थी जो वैज्ञानिक, निष्पक्ष एवं आलोचनात्मक हो। इसी जरूरत को पूरा करने के लिए उस समय मार्क्सवादी स्कूल सामने आया, जिसने पर्वूवर्ती दोनों स्कूलों की विचारधाराओं को नकार दिया।

भारत में मार्क्सवादी स्कूल के उभरने के कई कारण थे। सबसे पहले 1917 में रूस में हुई बोल ोविक क्रान्ति के बाद भारत व वि व के अनेक दे ाों में उस समय साम्यवाद एक बौद्धिक व राजनैतिक आन्दोलन के रूप में उभरने लगा था। 1930 के बाद भारतीय राजनीति में साम्यवादी व समाजवादी विचारधाराओं ने महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था। कांग्रेस में वामपंथी धड़े व कांग्रेस के बाहर साम्यवादी दलों के उभरने से साम्यवादी विचार भाक्ति ाली हो चुके थे।

❑ विभागाध्यक्ष, समाज ाास्त्र विभाग, आर0पी0पी0जी कालेज, बरूआ सागर, झांसी (उ0प्र0) भारत

हलकों पर भी पड़ा। मुख्यतः मार्क्सवादी इतिहास द र्शन से प्रभावित विद्वान भारतीय इतिहास की आर्थिक व्याख्या करने लगे। इस कड़ी में मुख्यतः विद्वान एम0एन0 राय, एस0ए0 डांगे जैसे साम्यवादी विचारक व राजनीतिकों से लेकर आर0पी0 दत्त, डी0डी0 कोसाम्बी व ए0आर0 देसाई जैसे इतिहासकार एवं समाज ाास्त्री भामिल थे।

कांग्रेस पार्टी का समाजवाद की ओर मुड़ने से भी मार्क्सवादी स्कूल को प्रोत्साहन मिला। आजादी से पहले व बाद में जवाहर लाल नेहरू ने कांग्रेस में वामपंथी राजनीति को मजबूत किया। आजादी के बाद कांग्रेस के सत्तारूढ़ होने के बाद मार्क्सवादी व समाजवादी विचारों के लेखकों के विद्वानों को प्रोत्साहन मिला। नेहरू जी ने ऐसे लेखकों कोप्रोत्साहन दिया जो कि भौतिकवादी आर्थिक व्यवस्था के समर्थक थे, परन्तु साथ ही भारतीय सभ्यता, संस्कृति व राष्ट्रीयता के भी समर्थक थे।

भारत में इस विचारधारा के उभरने का एक और अन्य कारण भारतीय समाज में भाोषित, दलित एवं कमजोर वर्गों की संख्या ज्यादा होना भी था। इनका समाज के ऊँचे वर्ग के लोग बहुत अधिक भाोषण करते थे। औपनिवे िक काल में तो आर्थिक भाोषण के कारण इन वर्गों की संख्या में भी वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप इन वर्गों ने स्वतन्त्रता से पहले ही अपने लिए आन्दोलन व संघर्ष भाुरू कर दिए थे। वे परिस्थितियां मार्क्सवादी विचारधारा की दृष्टि से बहुत अधिक उपयुक्त थी। इसी कारण मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों को अपनी विचारधारा को यहां फैलाने के लिए उचित सामाजिक माहौल मिल गया। भारत में मार्क्सवादी इतिहास लेखन की अवधारणा का अर्थ इन इतिहासकारों द्वारा केवल मार्क्स के इतिहास द र्शन का अनुसरण करना ही नहीं था, बल्कि इसका सही अर्थ इस बात में था कि वे कम या ज्यादा भौतिकवादी अवधारणा का प्रयोग अपने ऐतिहासिक भाोध कार्य में करते रहे।

मार्क्सवादी स्कूल का दृष्टिकोण मूलतः इतिहास की आर्थिक व्याख्या पर आधारित था। भारत में मार्क्सवादी इतिहासकारों ने 'द्वन्दात्मक पद्धति' को अपने अध्ययन व भाोध में प्रमुख स्थान दिया। इस सम्बन्ध में उन्होंने वि ोष रूप से भाोषित वर्गों के सामाजिक संघर्षों पर वि ोष ध्यान दिया है।

अपनी भाोध पद्धति में मार्क्सवादी इतिहासकारों ने आलोचनात्मक व वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग किया। इस सम्बन्ध में आधुनिक बुद्धिवाद उनका आधार रहा है, परन्तु उनके स्रोत ज्यादा नऐ नहीं रहे और भाोषित वर्गों का इतिहास लिखने के दाव के बावजूद उन्होंने इन वर्गों से जुड़े स्रोतों का आर्थिक प्रयाग इन्होंने अपने लेखन में नहीं किया, बल्कि ज्यादातर परम्परागत अभिजात्य वर्गीय स्रोतों का ही प्रयाग इन्होंने अपने लेखन में किया है।

भारतीय इतिहास को मार्क्सवादी इतिहासकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। डी0डी0 कोसाम्बी ने ही बहुत सारी मार्क्सवादी स्थापनाएं प्राचीन भारत के सम्बन्ध, में विकसित की। उन्होंने 'उत्पादन की लोह तकनीक' तथा 'हल' को आर्य व ब्राम्हणवादी संस्कृति की सर्वोच्चता कायम हो जाने का कारण बताया। उन्होंने 'उत्पादन की ए िायाटिक प्रणाली' की मार्क्सवादी अवधारणा का खण्डन करते हुए कहा कि भारत की उत्पादन प्रणाली काफी अच्छी थी। आर0एस0 भार्मा ने ब्राम्हणों के फलने–फुलने का कारण बताया था।

इसी प्रकार रोमिला थापर ने 'प्राच्य निरंकु ाता', 'आर्य प्रजाति' व 'अ ोक की अहिंसा' से सम्बन्धित पहले से चली आ रही मान्यताओं को खंडित किया। मोटे तौर पर प्राचीन भारत के सम्बन्ध में मार्क्सवादी स्कूल ने प्राचीन राज्यों, हिन्दू धर्म तथा अन्य धर्मों की व्याख्या की। इसके अलावा उन्होंने प्राचीन भारत का सामाजिक व आर्थिक इतिहास लिखा, दासों आदि की स्थिति पर प्रका ा डाला। इन इतिहासकारों ने प्राचीन काल में गैर–हिन्दूओं की भूमिका को भी रेखांकित किया। उन्होंने इतिहास के उजले व अंधेरे दोनों पहलुओं को सामने रखा व यथार्थपरक दृष्टिकोण के आधार पर इतिहस लेखन का प्रयास किया।

मध्यकालीन भारत के सम्बन्ध में भी मार्क्सवादी स्कूल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने इस युग को 'मुस्लिम युग' के स्थान पर 'मध्यकालीन युग' कहने पर जोर दिया। इस युग को 'मुस्लिम युग' कहना गलत है, क्योंकि उनके अनुसार इस युग के भाासकों ने वि ोषकर मुस्लिम भाासकों ने निष्पक्ष होकर भाासन किया। अपवाद कोई भी युग हो

सकता है। सती ा चन्द्रा, इरफान हवीब, नूरूल हसन आदि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण मार्क्सवादी इतिहासकार रहे हैं, जिन्होंने मध्यकालीन भारत पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण से इतिहास लेखन किया। इन्होंने विस्तार से मध्ययुगीन भारत समाज, राजनीतिक व्यवस्था व अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया। उन्होंने मध्यकाल में मिली–जुली हिन्दू–मुस्लिम, गंगा–जमुना संस्कृति के प्रादुर्भाव का वर्णन किया और स्थापित किया कि हिन्दू/इस्लाम धर्म का काल में परस्पर करीब आए। परिणामस्वरूप दोनों संस्कृतियों में मेल हुआ, जिससे दे ा में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, भाषाई, साहित्यिक व कलात्मक दृष्टि से बहुत अधिक वृद्धि हुई।

मार्क्सवादी इतिहासकारों ने 'महान मुगलों' मुख्यतः अकबर की 'सहिष्णुता' एवं 'धर्मनिरपेक्षता' नीतियों का वर्णन किया। इसक साथ ही उन्होंने मुगलकालीन मनसबदारी, जागीरदारी, जमींदारी आदि पर भी प्रका ा डाला। मार्क्सवादी इतिहासकारों ने मुगल साम्राज्य के पतन की नई आर्थिक व्याख्या की, जो कि राष्ट्रवादी इतिहासकारों व विद्वानों की पुरानी सरलीकृत राजनीतिक व्याख्या से अलग थी। इस व्याख्या में भू–राजस्व के संकट, कृषि के पतन, जमींदारों एवं विचौलियों के उभरने तथा प्र ाासनिक संस्थाओं जैसे–मनसबदारी, जागीरदारी आदि के चरमराने को मुगल साम्राज्य के पतन हेतु उत्तरदायी माना ना कि मात्र औरंगजेब की नीतियों को।

मार्क्सवादी इतिहासकारों ने अपने इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता के आद र्ा जो कि अच्छे इतिहास लेखन का आधार होता है, की अनदेखी की व साफ तौर पर एकपक्षीय इतिहास लेखन किया। मार्क्सवादी इतिहास लेखन का अप्रत्यक्ष उद्दे य दे ा के साम्यवादी विचारधारा एवं आन्दोलन को पुष्ट करना था। इस स्कूल के इतिहासकारों के स्रोत ज्यादातर परम्परागत व पुराने ही थे। इसके अलावा वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक इतिहास लेखन करने से उनका असल में अभिप्राय मार्क्सवादी द र्शन में वर्णित वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक विधि से था। इन्होंने 'आर्थिक इतिहास' पर अधिक जोर दिया जो कि उचित नहीं था। उन्होंने इतिहास में धर्म की भूमिका को भी कम करके आंका और इसे प्रायः ' ोषक के औजार' के रूप में देखा।

उपर्युक्त सीमाओं व आलोचनाओं के बावजूद मार्क्सवादी स्कूल का भारतीय इतिहास लेखन में भारी योगदान रहा। उन्होंने भारतीय इतिहास के सभी क्षेत्रों, युगों और विषयों पर जमकर लेखन किया है। कई क्षेत्रों में तो उन्होंने इतिहास लेखन की धारा ही बदल दी। मार्क्सवादी स्कूल ने राजवं ाों के स्थान पर 'आम जनता' के इतिहासलेखन की भारूआत की। इनके इतिहास लेखन के फलस्वरूप ही राजनीति के स्थान पर इतिहास में अर्थव्यवस्था व समाज के अध्ययन पर आर्थिक बल दिया जाने लगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मार्क्सवादी दृष्टिकोण, एम0ए0 हिस्ट्री लेसन्स पेपर 6, इंदिरा गांधी ने ानल ओपन यूनिवर्सिटी नई दिल्ली, पृ0 35।
2. चहल, एस0के0– 'मार्क्सवादी स्कूल भारतीय इतिहास के प्रति दृष्टिकोण', एम0ए0 हिस्ट्री लेसन्स पेपर 10, दूरवर्ती ि ाक्षा नि दे ाालय, कु रूक्षे त्र वि वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, पृ0 145।
3. चहल, एस0के0– 'मार्क्सवादी स्कूल भारतीय इतिहास के प्रति दृष्टिकोण', पूर्वोक्त पृ0 146।
4. मार्क्सवादी दृष्टिकोण, एम0ए0 हिस्ट्री लेसन्स पेपर 6, इंदिरा गांधी ने ानल ओपन यूनिवर्सिटी नई दिल्ली, पृ0 50–51।
6. विकिपीडिया।

*****